This question paper contains 4 printed pages.

8870 आपका अनुक्रमांक ____________

B.A. (बी०ए० / I **AS**

HINDI (B)— Paper I

हिन्दी (ख)— प्रश्नपत्र I

(भाषा-दक्षता, वक्तव्यांग, मध्यकालीन वक्तव्य, उपन्यास)

(प्रवेश-वर्ष 2000 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक :* 100

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी:— *प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक SOL / NCWEB / Non-Formal Cell के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में, कम होंगे।*

1. (क) 'ब्रज' **अथवा** भोजपुरी का सामान्य परिचय दीजिए। 5

(ख) 'दक्खिनी हिन्दी' **अथवा** 'संस्कृतनिष्ठ हिन्दी' की सामान्य विशेषताएँ लिखिए। 5

(ग) किन्हीं दो शब्दों के मानक रूप लिखिए :

छमा, चोपाई, मात्रभाषा, कृप्या। 2

(घ) किन्हीं दो वाक्यों के मानक रूप लिखिए :

(*i*) गीता पढ़ने को जाती है।

(*ii*) वह तीर से तीर छोड़ने लगा।

(*iii*) चोर को रस्सी बाँध कर ले गए।

(*iv*) अकेले आप दोनों जाएँ। 3

(ङ) किन्हीं **दस** शब्दों के हिंदी प्रतिरूप लिखिए :

Article, Agenda, Autonomous, Bonafide, Bureaucracy, Circular, Consent, File, Panel, Postponement, Verification, Validity, Revenue, Lease, Telecommunication. 10

2. (क) 'विभाव' **अथवा** 'संचारी भाव' का परिचय दीजिए। 4

(ख) 'वीर रस' **अथवा** 'शृंगार रस' का सोदाहरण परिचय दीजिए। 4

(ग) किन्हीं **दो** छन्दों के लक्षण और उदाहरण लिखिए :

दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, भुजंगप्रयात। 6

(घ) किन्हीं **दो** अलंकारों का सोदाहरण परिचय दीजिए :

उत्प्रेक्षा, यमक, वक्रोक्ति, मानवीकरण। 6

3. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूं मनि नाहीं विश्राम।।
इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूँ जीव।
लोही सींचौं तेल ज्यूँ, कब मूख देखौं पीव।।

अथवा

अब लौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं।।
पायेऊँ नाम-चारु चिंतामनि, उर कर तें न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।

परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति-पद-कमल कसैहौं। 10

(ख) या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं-ज्यौं बूड़ै स्याम रँग, त्यौं त्यौं उज्ज्लु होई॥
बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंहँ करै भौंहँनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ॥

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यों
निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अधनि कहूँ नहिं आन
तिहारियै॥
एक ही जीव हु तौ सु तौ वार्‌यौ सुजान सकोच औ सोच
सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घनआनँद बावरी रीझ के हाथनि हारियै।
10

4. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

कोई रास्ता पलटता नहीं मालती ..... रास्ते तो, अपनी राह चले जाते हैं ..... आदमी पलट जाता है ..... लेकिन मैं अब आदमी कहाँ रह गया हूँ ..... मैं अब सिर्फ एक रास्ता रह गया हूँ ..... वह भी केवल लिली के लिए! उसे अभी मेरी जरूरत है। जब उसे भी मेरी जरूरत नहीं रहेगी तो रास्तों की तरह ही मैं अपनी राह चला जाऊँगा।

अथवा

ईमानदारी और बेईमानी में चार अंगुल का भी फरक नहीं है। यह सवाल चित्त और पट का है। एक ही स्थिति के ये दो पहलू हैं, अब यह आप पर है कि आप किस पहलू से देखते हैं। राजनीति यही है। और राजनीति की सफलता भी यही है कि आपका पहलू ईमानदारी से भरा और सही माना जाए। 10

P. T. O.

5. (क) सूरदास **अथवा** भूषण का साहित्यिक परिचय दीजिए। 7

(ख) मीराबाई के संकलित पदों का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

घनानन्द रचित *'सुजान-हित'* के संकलित सवैयों का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 8

6. *'बरली आँधी'* उपन्यास का कथानक लिखिए।

अथवा

जग्गी बाबू के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 10